ISSN-2582-6530
पीअर रिव्यूड छमाही हिंदी ई-जर्नल
जनवरी-जून 2020

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

KANCHANJANGHA

Confluence of languages, literature and culture

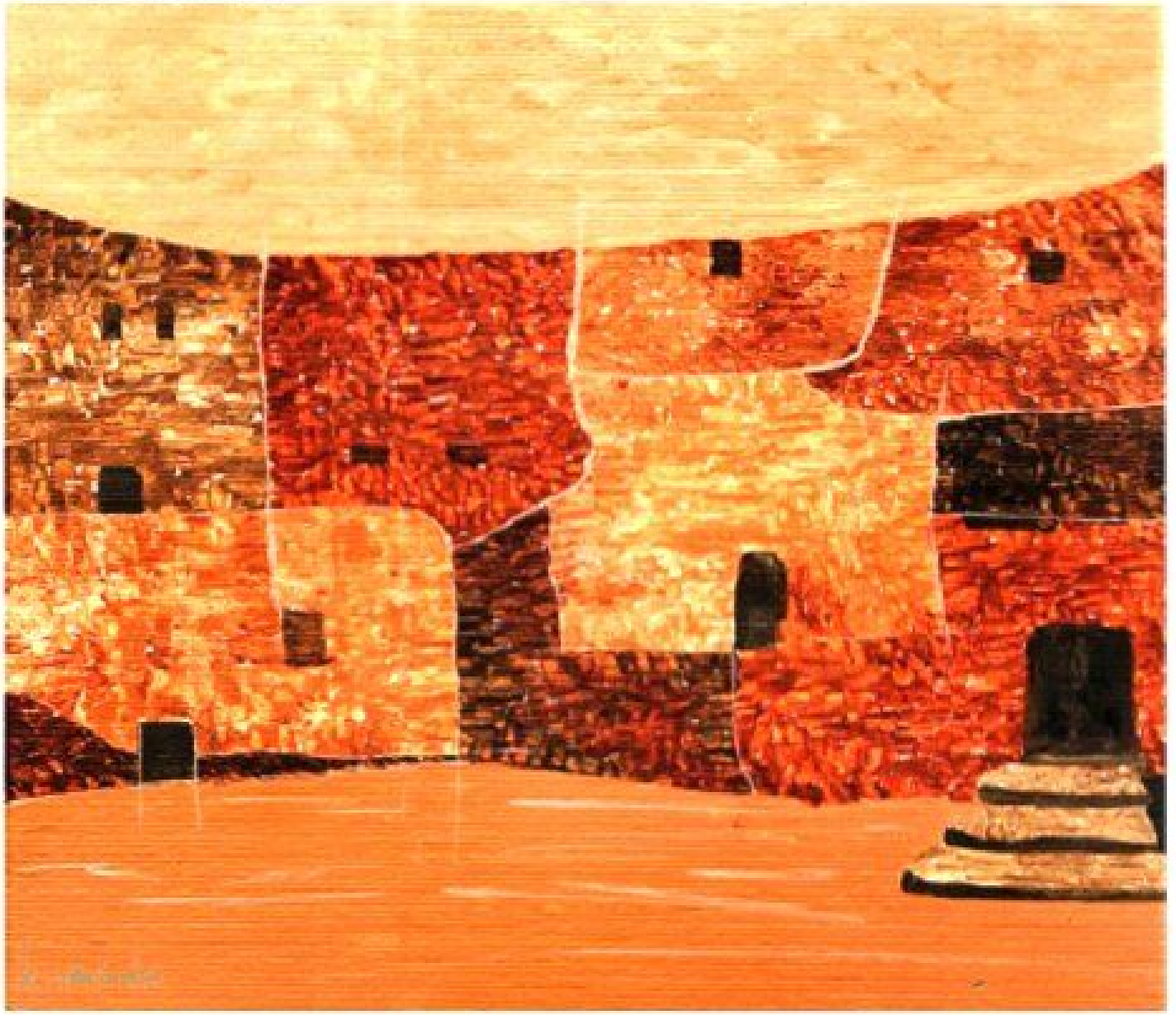

संपादक : प्रदीप त्रिपाठी

इस अंक में

संपादकीय

स्मरण

फणीश्वरनाथ रेणु : संभवंति युगे-युगे... शिवमूर्ति

लेख

सिक्किम की लोक संस्कृति पर कंचनजंघा का प्रभाव छुकी लेप्चा
रंगभेद, नस्ल और अश्वेत समस्या गोपाल प्रधान
मणिपुर में हिंदी पत्रकारिता का अभियान देवराज
हिंदी बाल साहित्य का स्वातंत्र्योत्तर स्वरूप: बहस और विमर्श दिविक रमेश
असमिया लोक साहित्य में राम अनुशब्द
हिंदी एवं नागा जनजाति की भाषाओं का अंतर्संबंध थुन्बई
परिस्थिति और निर्मिति : मोहन से महात्मा राजीव रंजन गिरि
त्रिपुरा की लोक कथाओं में नारी: कॉकबरक भाषा के संदर्भ में डॉ. नुकफाँटी जमातिया
लेखकनामा अनिल यादव
अरुणाचल की हिंदी हरीश कुमार शर्मा
भारतीय नेपाली कथा-साहित्य में कोलकाता महानगर का प्रतिनिधित्व डॉ. कविता लामा
थर्ड जेंडर के संघर्ष का प्रतिबिंब : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा बी आकाश राव
'राजा हरिश्चंद्र': भारतीय सिनेमा का मंगलारंभ डॉ. सुरभि विप्लव

कविताएं

श्रीप्रकाश मिश्र की दो कविताएं
बाबुषा कोहली की पाँच कविताएं
सुशीला टाकभौरे की चार कविताएं
निशांत की तीन कविताएं
विहाग वैभव की पाँच कविताएं

अनूदित रचनाएँ (कविता, लेख एवं नाटक)

अमर बानियाँ 'लोहोरो' की चार कविताएं- (नेपाली से हिंदी)	अनुवादक: सुवास दीपक
पंकज गोबिन्द मेधी की तीन कविताएं- (असमिया से हिंदी)	अनुवादक: दिनकर कुमार
खासी लोक कथाओं में नारी शोषण (खासी से हिंदी)	अनुवादक : डॉ. जीन एस. ड्खार
मयाङ देश की भाभी (नाटक: मणिपुरी से हिंदी)	अनुवादक: एलाङ्बम विजयलक्ष्मी

कहानियाँ

मेरा घर कहाँ है?	सोनी पाण्डेय
इच्छा मृत्यु	जमुना बीनी
त्रासदी	महेंद्र भीष्म

पूर्वोत्तर का पौराणिक क्षितिज

तानी (निशी आदिवासी किंवदंती)	जोराम यालाम नाबाम

लोक कथाएँ

नागालैंड की लोक कथाएँ	चंद्रशेखर चौबे
मिज़ोरम की लोक कथाएँ	प्रो. संजय कुमार एवं डेविड के. अजयु

पुस्तक समीक्षा

जितेन्द्र श्रीवास्तव- जीवन का प्रमेय गढ़ते हुए	मनोज पाण्डेय
सामाजिक व्यवस्था पर चोट करती कहानियाँ	ऋचा द्विवेदी
लौटने की चाह में बचे रहने की उम्मीद	राहुल

धरोहर

पूर्वोत्तर भारत के विविध रंग (छाया चित्र)	कुमार गौरव मिश्र

असमिया लोक साहित्य में राम
(लोकगीतों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अनुशब्द
संपर्क: 8876049200

लोक साहित्य लोक द्वारा निर्मित, लोक विषयक और लोक प्रचलित साहित्य है। इसका जुड़ाव विशेष रूप से श्रम और संस्कार से होता है। यह सामूहिकता की भावना को सूचित करता है, इसीलिए इसका पाठ विभिन्न उत्सवों एवं अवसरों पर होता है। लोक साहित्य हमारे पुरखों का साहित्य है। हमारे पुराने समाज का साहित्य है। इसमें जीवन के विभिन्न प्रसंगों से प्राप्त अनुभवों एवं सत्यों की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है। इसमें भावों की अभिव्यक्ति में किसी तरह का बनावटीपन नहीं होता बल्कि भावों का भदेसपन लोक साहित्य की अपनी विशेषता होती है। इसलिए इस साहित्य की टेक्नीक और टेक्सचर में लोक की ज्यादा उपस्थिति होती है।

वास्तव में लोक साहित्य मौलिक साहित्य है। वह कच्चे-कोरवर भावों का साहित्य है। यह शास्त्रीय ज्ञान के बोझ से मुक्त तथा छंद एवं अलंकार की चिंता से रहित साहित्य है। यह अपने वाचिक रूप में किसी व्यक्ति विशेष द्वारा सृजित साहित्य नहीं है, इसीलिए इस पर कोई एक व्यक्ति न तो कॉपीराइट का दावा कर सकता है और न ही रॉयल्टी या ए.पी.आई का क्लेम ही कर सकता है। यह जनता का, जनता के लिए और जनता से जन्मा साहित्य है।

यह कहना उचित होगा कि यदि 'साहित्य समाज का दर्पण है' तो लोक साहित्य लोग समाज का, क्योंकि इसमें लोक का चेहरा ही दिखाई देता है और लोक का हृदय ही बोलता है। इसमें लोक जीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी कृत्रिमता के समायी रहती हैं। लोक साहित्य की ये विशेषताएँ अविच्छिन्न रूप में लोक साहित्य के विशिष्ट अंग, लोकगीतों में भी स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती हैं। लोकगीत लोक जीवन की अभिव्यक्ति का जीवंत और सशक्त माध्यम है। इसमें लोकहृदय के उद्गार होते हैं। देवेंद्र सत्यार्थी के शब्दों में कहें तो "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र होते हैं।" सामान्यतः लोक में पीढ़ियों से वाचिक रूप में प्रचलित गीतों को लोकगीत कहा जाता है। जनसामान्य के जीवन-राग, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, स्वप्न एवं आकांक्षाएँ आदि का निवेश इन गीतों में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। लोकगीतों में क्षेत्र विशेष की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा एवं वहाँ के लोक जीवन की छवि अभिव्यक्त होती है। भारत की अन्य भाषाओं के साहित्य की तरह असमिया साहित्य में भी लोकगीतों की एक प्राचीन